विभिन्न सांस्कृतिक समूहों के वृद्ध व्यक्तियों के एकाकीपन का अध्ययन

दिनेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर, मनोविज्ञान विभाग
पी0बी0 पी0जी0 कॉलेज, प्रतापगढ़ सिटी, प्रतापगढ़–230143, उ0प्र0, भारत
dineshpbpg13@gmail.com

प्राप्त तिथि 31.07.2015, स्वीकृत तिथि 10.09.2015

सार

वर्तमान अध्ययन में संस्कृति और आयु का प्रभाव वृद्ध व्यक्तियों के एकाकीपन में पाया गया। 40 वृद्ध व्यक्तियों को दो आयु समूहों में लिया गया जिनमें 60–65 और 75–80 वर्ष की आयु का चयन दो बड़े सांस्कृतिक समूह हिन्दू 20 प्रयोज्य और मुस्लिम 20 प्रयोज्य लिये गये। अतः प्रत्येक उपचार में 10 प्रयोज्य को लिया गया। प्रो0 एस0एन0 राय और डॉ0 एस0 पी0 पाण्डे, मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ द्वारा निर्मित एकाकीपन मापनी(एम.यू.एल.एस.) का प्रयोग प्रत्येक प्रयोज्य पर वैयक्तिक किया गया। प्राप्त आंकड़ों पर टू वे एनोवा का प्रयोग किया गया। परिणाम में आयु परिवर्त्य का सार्थक प्रभाव एकाकीपन के प्राप्तांकों में पाया गया। 75–80 आयु के व्यक्तियों के 60–65 वर्ष आयु के व्यक्तियों से अधिक एकाकीपन की भावना को प्रदर्शित करते हैं। संस्कृति का प्रभाव भी मुख्य रूप से निकल कर आता है। मुस्लिम वृद्ध व्यक्तियों की तुलना में हिन्दू वृद्ध व्यक्ति एकाकीपन का अधिक अनुभव करते हैं। अतः उम्र एवं संस्कृति में अन्तःक्रिया असफल है। अतः एफ वैल्यू सार्थक है।

बीज शब्द– सांस्कृतिक समूह, वृद्ध व्यक्ति, एकाकीपन।

Loneliness among elderly persons of different cultural groups

Dinesh Kumar
Assistant Professor, Department of Psychology
P.B. P.G. College, Pratapgarh City, Pratapgarh-230143, U.P., India
dineshpbpg13@gmail.com

Abstract

The present study was conducted to find out the effect of culture and age on loneliness of elderly person. Forty elderly people representing two age group e.g. 60-65 year and 75-80 year were selected from two major cultural groups. e.g. Hindu(20 Subjects) and Muslim (20 Subjects). Thus each treatment consisted of 10 subjects loneliness scale developed by Prof. Rai and Dr Pandey and known as Meerut University loneliness Scale(MULS) was applied on each subject in individual session. The obtained data were analyzed by using two way ANOVA techniques. The results revealed the fact that age variable significantly influence loneliness score. The subjects higher in age i.e. 75-80 years of age demonstrated more feeling of loneliness in comparison to elderly persons of 60-65 years of age. Effect of culture was also found to be significant. Hindu elderly persons suffered more from feeling of loneliness in comparison of Muslim elderly persons irrespective of the age variable. The integration between age and culture failed in producing significant F Value.

Key words- Cultural group, old people, loneliness.

प्रस्तावना– आधुनिक युग में एकाकीपन समाज की एक महत्वपूर्ण ज्वलन्त सामाजिक समस्या है। यह समस्या न केवल व्यक्ति को बल्कि समाज को भी प्रभावित करती है। एकाकीपन एक जटिल उपागम है। समाज मनोवैज्ञानिकों ने अपने

अध्ययनों द्वारा यह इंगित किया है कि एकाकीपन प्रत्येक आयु, संस्कृति, वर्ग तथा देश के व्यक्ति में पाया जाता है। सुलीवान(1953) ने बताया कि एकाकीपन का उदय पूर्व किशोरावस्था में हो जाता है और यह वही अवस्था है जब व्यक्ति के अन्दर समीपता की आवश्यकता का विकास होता है।
एकाकीपन व्यक्तिगत विशेषता होने के साथ–साथ, परिस्थितियों से भी प्रभावित होता है। इसलिए व्यक्ति के जीवन में एकाकीपन की अनुभूति कभी न कभी अवश्य होती है। एकाकीपन का अध्ययन निरीक्षणों द्वारा किया जा सकता है। यह एक व्यक्तिगत अनुभव है, जो बाहरी घटनाओं पर निर्भर करता है।

रॉबर्ट वेइज(1953) ने एकाकीपन के दो प्रकार बताये हैं–

1. सामाजिक एकाकीपन– जिसकी उत्पत्ति सामाजिक नेट–वर्क की कमी से उत्पन्न होती है। जैसे किसी के पास अच्छे दोस्त या साथी नहीं है जिससे वह अपनी रूचि या प्रतिक्रियाओं को बांट सके तो ऐसे व्यक्ति में उत्पन्न एकाकीयता, सामाजिक एकाकीपन कहलाता है।

2. संवेगात्मक एकाकीपन– इसका प्रमुख कारण किसी व्यक्ति में अन्य व्यक्ति के साथ प्रगाढ़ भावात्मक लगाव की कमी से है। इसलिए संवेगिक एकाकीपन किसी व्यक्ति के दूसरे से सामाजिक सम्बन्धों की गुणवत्ता पर निर्भर करता है जबकि सामाजिक एकाकीपन मात्रात्मक सम्बन्धों पर निर्भर करता है।

पाश्चात्य देशों में एकाकीपन के कारणों तथा उसको प्रभावित करने वाले तत्वों का विस्तार से अध्ययन किया गया है। लेकिन भारत वर्ष में ऐसे अध्ययनों की कमी है। भारत एक ऐसा देश है जिनमें अनेक संस्कृति के लोग जैसे हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई, जैन, बौद्ध तथा अन्य एक साथ रहते हैं। चूंकि एकाकीपन एक सामंजस्य समस्या है, इसलिए यह समस्या उठती है कि क्या भिन्न–भिन्न संस्कृति के लोगों के एकाकीपन में अन्तर पाया जायेगा। इसी सन्दर्भ में यह भी महत्वपूर्ण है कि पाश्चात्य जगत में किये गये अध्ययनों ने इंगित किया है कि एकाकीपन किसी भी आयु में हो सकता है। लेकिन भारत वर्ष में परिवार एक महत्वपूर्ण संस्था है जो व्यक्ति को हर तरह से सुरक्षा प्रदान करती है। इसलिए इस अध्ययन का विषय है कि क्या समाज के लोगों में एकाकीपन पर आयु का प्रभाव पड़ता है। अतः इस वर्तमान अध्ययन को इसी परिप्रेक्ष्य में सम्पन्न किया गया है।

विधि

समस्या– प्रस्तुत शोध पत्र का उद्देश्य एकाकीपन पर आयु और विभिन्न संस्कृतियों के पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन करना।

परिकल्पना–

1. एकाकीपन पर आयु का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ता है।
2. एकाकीपन पर संस्कृति विभिन्नता का कोई प्रभाव नहीं पड़ता।
3. आयु तथा संस्कृति के चरों के मध्य अन्तःक्रिया में सार्थक प्रभाव नहीं पाया जायेगा।

अभिकल्प– वर्तमान अध्ययन में 2x2 द्विकारक अभिकल्प समूह का प्रयोग किया गया है। जिसमें प्रथम चर आयु के दो स्तर वृद्ध तथा अतिवृद्ध और संस्कृति के दो प्रकार हिन्दू और मुसलमान लिये गये है।

चर– स्वतंत्र चर–आयु(वृद्ध, अतिवृद्ध), आश्रित चर– एकाकीपन

प्रतिदर्श– यह अध्ययन कुल 40 पुरूषों पर सम्पन्न किया गया। जिसमें 20 व्यक्ति 60–65 वर्ष के तथा 20 व्यक्ति 75–80 वर्ष के थे। प्रत्येक आयु वर्ग में 10 हिन्दूओं और 10 मुसलमानों को सम्मिलित किया गया है।

सामग्री– एकाकीपन की मात्र के मापन के लिए एम.यू.एल.एस. का प्रयोग किया। जो राय और पाण्डे द्वारा बनाया गया स्केल है।

विश्वसनीयता– एम.यू.एल.एस. की विश्वसनीयता गुणांक +0.83 पाया गया है।

वैधता– इसकी वैधता 0.78 पायी गयी।

प्रशासन प्रक्रिया– सर्वप्रथम हमनें विषयी को आरामपूर्वक बैठाया, तथा उसमें सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध स्थापित किया। फिर उनसे कहा कि मैं जो आपको प्रपत्र दे रहा हूँ। इसमें कुछ कथन दिये हुए हैं जिनका अनुभव कम अथवा अधिक मात्रा में सभी व्यक्ति करते हैं। आप इसको ध्यानपूर्वक पढ़ें तथा सोच विचार कर यह उत्तर दें कि प्रत्येक कथन का अनुभव आप कितनी मात्रा में करते हैं। उत्तर देने के लिए चार विकल्प हैं– प्राय, कभी–कभी, शायद कभी, और कभी नहीं। जो कथन आपको उचित लगता है उस कोष्ठक में सही का निशान लगा दें।

प्राप्तांक– एम.यू.एल. स्केल में कुल 25 कथन है इनमें 13 कथन विपरीत दिशाओं में हैं तथा 12 कथन अनुकूल दिशाओं में हैं, इसमें विपरीत दिशाओं में 1,2,3,4 नम्बर दिये तथा अनुकूल दिशाओं में 4,3,2,1 नम्बर दिये। इस प्रक्रिया द्वारा सभी 40 प्रयोज्यों के एकाकीपन प्राप्तांक को ज्ञात किया गया।

परिणाम– अध्ययन से प्राप्त प्राप्ताकों के सांख्यकीय विश्लेषण में टू वे एनोवा का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणाम निम्न तालिका में दर्शाया गया है–

प्रसरण के स्रोत Source of Variance	वर्गों का योग SS	df	M.S.	F. Ratio
अ (आयु)	46.225	1	46.225	4.40
ब (संस्कृति)	180.625	1	180.625	17.35
अ x ब	0.625	1	0.625	0.06
त्रुटि	374.900	36	10.41	
योग	602.375	39		

F.95 (1,36) = 4.11, F.99 (1,36) = 7.39

प्रस्तुत शोध पत्र में पाया गया कि एकाकीपन की मात्रा पर आयु और संस्कृति का सार्थक प्रभाव पड़ता है। आयु का प्रभाव 0.05 स्तर पर सार्थक पाया गया तथा संस्कृति का प्रभाव 0.01 स्तर पर सार्थक पाया गया। जबकि अन्तःक्रिया के मध्य सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। हिन्दुओं के एकाकीपन का मध्यमान 77.2 तथा मुसलमानों के एकाकीपन का मध्यमान 75.05 पाया गया। वृद्ध व्यक्तियों के एकाकीपन का मध्यमान 74 तथा अतिवृद्ध व्यक्तियों के एकाकीपन का मध्यमान 78.25 पाया गया। हिन्दुओं में मुसलमानों की अपेक्षा ज्यादा एकाकीपन पाये जाने का सम्भावित कारण यह है कि मुसलमानों का परिवार हिन्दुओं की अपेक्षा बड़ा होता है। प्रस्तुत अध्ययन में यह भी पाया गया कि जितनी व्यक्ति की आयु बढ़ती जाती है उतना ही वह एकाकीपन का अनुभव करता है।

सन्दर्भ

1. ब्लूज(1973) ओल्ड ऐज इन चेन्जिंग सोसायटी, न्यूयार्क, न्यू व्यू पैटर्न।
2. टूनस्टाल जे0(1967) ओल्ड एण्ड एलोन, न्यूयार्क, हयूमनटीज प्रेस।
3. वान, वीज एवं लेवन, एच0 डी0 (1958), ओन लोनेस साइकेट्री, मु0पृ0 37–43।
4. विलियम, ई0 जी0(1983) एडोलसेन्ट लोनलीलैस, एडोलसेन्स, खण्ड–18, पृ0 69।
5. वूड एल0 ए0(1986) लोनलीनेस, इन आर0 हैरी(ई0डी0) द सोशल कन्सट्रक्शन ऑफ इमोसन्स, मु0पृ0 184–209, न्यूयार्क।